2021-2022. Dr Ambili V.S

साहित्यिक कालजयी रचनाकार
प्रेमचन्द

डॉ. राजेश कुमार आर.
असिस्टेंट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर
एवं शोध विभाग (हिन्दी)
महात्मा गांधी कालेज, तिरुवनंतपुरम,
केरल

Dr. SHEELA. T. NAIR
HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
N.S.S. COLLEGE, PANDALAM
PATHANAMTHITTA (DIST.)
KERALA, PIN : 689 501

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE

अमन प्रकाशन
कानपुर

Scanned with CamScanner
Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:10 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner

अनुक्रम

- देश–कालजयी साहित्यकार प्रेमचन्द : केरल का विशेष संदर्भ 13
  – प्रो. (डॉ.) एस. तंकमणि अम्मा
- 'गोदान' में नारी चेतना : धनिया के संदर्भ में 18
  – डॉ. राखी बालगोपाल
- प्रेमचंद की कहानियों में नैतिक मूल्यों की अवधारणा 22
  – डॉ. गोपकुमार जी.
- हाशिए कृत समाज के दक्ता मुंशी प्रेमचंद 26
  – डॉ. अम्बिली वी. एस.
- प्रेमचंद के निबंध साहित्य – डॉ. राजेश कुमार आर. 35
- प्रेमचंद की कहानियों में अभिव्यक्त दलित–चेतना 39
  – डॉ. कविता वी. राजन
- प्रेमचन्द के उपन्यासों में ग्रामीण चेतना 'गोदान' के विशेष सन्दर्भ में 46
  – डॉ. पी. के. प्रतिमा
- प्रेमचंद : कुछ अंतरसाक्ष्य कुछ बहिरसाक्ष्य 53
  – डॉ. रंजीत रविशैलम
- प्रेमचंद साहित्य में वृद्ध विमर्श 'बूढ़ी काकी' के सन्दर्भ में 57
  – हिमाक्षी नाथ
- प्रेमचंद की साहित्यिक दुनिया में बाल–बच्चे 59
  – अजित्रा आर.एस.
- दलित जीवन की दृष्टि में प्रेमचन्द की कहानी की प्रासंगिकता 63
  – आर्या वी. एस.
- इक्कीसवीं सदी में प्रेमचंद और गोदान की भूमिका 68
  – आतिरा बाबू
- प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी समस्या : 'सेवासदन' और 'निर्मला' के विशेष संदर्भ में 70
  – सुनमी एल. विजयन
- प्रेमचंद की कहानियों में सांस्कृतिक संवेदना : चुनी हुई कहानियों के संदर्भ में 75
  – लिजू एम. एल
- प्रेमचंद के निर्मला उपन्यास में चित्रित नारी का आत्म संघर्ष 79
  – लक्ष्मी सी.वी.
- प्रेमचंद के कथासाहित्य का पुर्नपाठ : कोविड–19 महामारी के संदर्भ में 81
  – कृष्णप्रीति ए. आर.
- प्रेमचन्द के गोदान उपन्यास में चित्रित समस्याएँ 88
  – राजेश्वरी एस.
- कहानीकार प्रेमचंद (चुनी हुई कहानियों के विशेष संदर्भ में) 93
  – एन. आर. सेतु लक्ष्मी
- प्रेमचंद के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी : निर्मला के परिप्रेक्ष्य में 101
  – विनोद पी.
- हिन्दी निबंध साहित्य और प्रेमचंद : 'जीवन में साहित्य का स्थान' निबंध के आधार पर एक अवलोकन– 105
  अमल ज्योतिष जे. एस.
- प्रेमचंद के निबंध कला : 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध के आधार पर एक अध्ययन 108
  – अमृता एम.

Dr Sheela T Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

DEPARTMENT OF HINDI
PANDALAM, PTA (Dist.)
KERALA - 689 501
Phone: 04734-252221
N.S.S. COLLEGE

Scanned with CamScanner
Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:10 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner

हाशिएकृत समाज के वक्ता मुंशी प्रेमचंद

– डॉ. अम्बिली वी. एस.
सहायक आचार्या, हिन्दी स्नातकोत्तर
एवं शोध विभाग, एन. एम. एम. कॉलेज,
चंगनाशेरी

हिन्दी कथा के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचंद का पदार्पण साहित्य एवं समाज के लिए नवीन दिशा का सूचक है। कथा सम्राट ने दलित, स्त्री, किसान जैसे हाशियेकृत वर्ग पर अपनी विस्तृत साहित्यिक संवेदना से जो भी लिखा वह उनकी सामाजिक संवेदना थी। ये वर्ग उनके लिए बाज़ार या राजनीति का सिक्का नहीं था, बल्कि उनकी जिन्दगी का अभेद्य हिस्सा था। दबी–कुचली जनता का वास्तविक उत्थान ही उनका लक्ष्य रहा। मानवतावादी लेखक होने के कारण वे अन्याय, अधर्म, शोषण और सामाजिक असमानता के निंदक रहे हैं। उनकी रचनाओं द्वारा दमित–शोषित समाज की मूक पीड़ा को वाणी मिली थी। एक कथाकार की हैसियत से प्रेमचंद ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में दलित जीवन का मार्मिक वर्णन किया है। प्रेमचंद दलित नहीं थे, उनका साहित्य दलित साहित्य भी नहीं कहा जा सकता। वे आत्मकथात्मक दलित साहित्य नहीं लिख सकते थे, पर उनमें दलित यथार्थ की व्यापक चेतना थी। उनकी कहानियों में दलितों के मानवाधिकार और आर्थिक मुक्ति का संघर्ष बुलंद है। ठाकुर का कुआँ, सदगति, मंत्र, मंदिर, घासवाली, बाबाजी का भोग, दूध का दाम, सवा सेर गेहूँ, लांछन, गुल्ली डंडा, कफ़न आदि में दलितों की समस्याओं से संबन्धित अनेक आयाम उपलब्ध होते हैं। 'ठाकुर का कुआं' में गंगी पानी नहीं ले पाती। 'मंदिर' में सुखिया मंदिर में घुस नहीं पाती और बच्चा दरवाजे के बाहर ही दम तोड़ देता है। 'दूध का दाम' का लड़का मंगल खेल में बराबरी का हिस्सा माँगता है, न मिलने पर पहले अकड़कर चला जाता है और भूख लगने पर जूठन खाने के लिए फिर उसी दरवाज़े पर अपने कुत्ते के साथ आ खड़ा होता है। 'सदगति' का दुखी चमार और 'कफ़न' के घीसू–माधव सामाजिक बहिष्कार, अपमान और यंत्रणा से निकलने की जद्दोजहद में फंसे रहते हैं।

दलित प्रेमचंद के जीवन और साहित्य का अविभाज्य अंग था। वे दलितों के साथ उठते–बैठते, खाते–पीते और उनकी लड़ाइयों में हिस्सा लेते थे। ए[illegible]

Sd/-
Dr. Sheela T Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

दलितों को लेकर प्रेमचंद की अवधारणा राजनीतिक जरूरत के अनुसार गिनी–चुनी अछूत जातियों तक सीमित नहीं थी। जो भी रौंदा–कुचला और दब गया है उनकी नजर में दलित है। यही वजह है कि उनके कथा–चरित्रों में भंगी, चमार, दुसाध, मुसहर आदि सभी पिछड़ी जातियाँ हैं, वहाँ इकहरापन नहीं है। शोषण और उत्पीड़न का रूप सीमित भी नहीं है। उनकी कहानियों में दलितों के मुक्ति–संघर्ष की चेतना भरपूर नज़र आती है। उनकी घासवाली, स्वामिनी, प्रेम का उदय बालक, सती जैसी कहानियों में दलित स्त्रियों की संवेदना और उनका विद्रोह है। प्रेमचंद ने हिन्दू धर्म और धन के बीच सांठ–गांठ को पहचानते हुए बार–बार धार्मिक व्यवस्था और पुरोहित–महंत की खिल्ली उड़ाई है। प्रेमचंद के कथा साहित्य में अछूतों को केंद्र पात्र बनाना हिन्दी नवजागरण के अधूरेपन को थोड़ा–बहुत भर देता है। प्रेमचंद लक्षित करते हैं कि भारत में राष्ट्रीयता की नींव सबसे अधिक कमज़ोर है। महंतों और धर्माचार्यों का राजनैतिक शासन भले न हो, पर उनका मनोवैज्ञानिक शासन जबर्दस्त है। देश के करुण विकास के किसी मोड़ पर राजनैतिक सत्ता हथियाना उनके लिए असंभव काम नहीं है। 'सदगति' में दुखी चमार को अपने पवित्र अधिकार से बेगार कराना और उसके मर जाने से अधिक लाश की चिंता करना कितना भयावह है। वह एक आस्थावान दलित था, धार्मिक व्यवस्था के संस्कारों से जकड़ा हुआ भी था। जब उसकी औरत और कन्या चमार की लाश पर दहाड़े मारकर रो रही थीं, पंडितायन कहती है, "चमार का रोना मनहूस है। इन डायनों ने तो खोपड़ी चाट डाली। सभों का गला भी नहीं पकता।" (प्रेमचंद, सदगति) सामंती धार्मिक व्यवस्था की संवेदनहीनता अपने चरम पर पहुँच जाती है कि दलित को दुखड़ा रोना तक मना है। दलित को कोई पानी के लिए भी नहीं पूछता था, क्योंकि परंपरागत धार्मिक व्यवस्था के प्रमुख गुण मानवीय करुणा, त्याग, मैत्री और सादगी का बुरी तरह से क्षय हो चुका था।

प्रेमचंद ने दलितों की हीन और असहाय अवस्था का ही चित्र नहीं खींचा, उनकी बेचैनी और प्रतिरोध के दृश्य भी खींचे हैं। 'दूध का दाम' कहानी में दलित की त्रासद नियति है, पर बावजूद इसके हक की आवाज़ भी उठती है। अछूत मंगल बाबू साहब का बेटा सुरेश घोड़ा बनकर ढोने से इनकार करता है। वह खेल में बराबर का हिस्सा मांगते हुए कहता है, "मैं कब कहता हूँ की भंगी नहीं हूँ, लेकिन तुम्हें मेरी ही माँ ने दूध पिलाकर पाला है, जब तक मुझे भी सवारी करने को नहीं मिलेगी, मैं घोड़ा नहीं बनूँगा। तुम लोग बड़े घघड हो। आप तो मज़े से सवारी करोगे और मैं घोड़ा ही बना रहूँगा।" (प्रेमचंद, दूध का दाम) वह भगा दिया जाता है, पर खे[illegible] मंगल अपना हक बता देता है। लेकिन वह उदास भी हो[illegible] की घर की भंगी जूठन उसे नहीं मिलेगी और उसे भू[illegible] उसके स्वाभिमान पर भूख की ही जीत होती है। [illegible] प्रेमचंद की दलित चेतना युक्त सर्वश्रेष्ठ कहानी मानी जा

DEPARTMENT OF HINDI
N.S.S. COLLEGE

Scanned with CamScanner
Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:10 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner

उसे सचेत करने की कोशिश की है। उन्होंने अपने लेखन के द्वारा स्त्री को सुप्तावस्था से जागृत किया है। उनकी दृष्टि में नारी त्याग एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति है. "स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अँधेरे से। मनुष्य के लिए क्षमा, त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चतम आदर्श है। नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है।" (प्रेमचंद, गोदान) 'गोदान' के उपर्युक्त कथन के पीछे लेखक प्रेमचंद का यह लक्ष्य रहा है कि मानव जीवन में सात्विक गुणों की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय नारी अधिकांश रूप से सात्विक प्रवृत्तिवाली है। इसलिए वह आदर्श की प्रतिमूर्ति है। प्रेमचंद ने विविध प्रकार के नारी पात्रों के माध्यम से नारी के उदात्त व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है।

प्रेमचंद ने समाज की उपेक्षित एवं पीडित–अपमानित स्त्री को अपने अधिकारों के प्रति सावधान किया। प्रेमचंद की 'बेटोंवाली विधवा', 'बडी बहन', 'बड़े घर की बेटी', 'मर्यादा की वेदी', 'कफन' जैसी कहानियों मे पुरुष दबाव, उत्पीड़न, शोषण व आर्थिक विषमता से पीडित स्त्री के विभिन्न रूप उजागर होते हैं। वेश्याओं के प्रति समाज की कठोरता के विषय मे उनकी कहानी 'वेश्या' की माधुरी कहती है–"पुरुष इतना निर्लज्ज है कि उसकी दुरवस्था से अपनी वासना तृप्त करता है और इसके साथ ही इतना निर्दय कि उसके माथे पर पतिता का कलंक लगाकर उसे दुरावस्था मे मलते देखना चाहता है। क्या वह नारी नही है? क्या नारी के पवित्र मंदिर में उसका स्थान नहीं?" (प्रेमचंद, वेश्या) प्रेमचंद ने अपनी कहानियों द्वारा स्त्री को समानता तथा आदर देकर उसे अपनी दुर्दशा से ऊपर उठाने की कोशिश की।

भारतीय समाज में नैतिकता का दोहरा मानदंड प्रचलित है। जिन कार्यों के लिए पुरुष निंदनीय नहीं था, उन्हीं के वजह से स्त्री को पतिता और कुलटा समझी जाती थी। स्त्री–पुरुष के बीच के इन वैषम्यों के कारण उत्पन्न समस्याओं को भी कथा सम्राट ने अपनी गहन सामाजिक दृष्टि से परखा था। 'प्रेमाश्रम', 'वरदान', 'सेवासदन', 'निर्मला' आदि उपन्यासों के कैंद्र में ऐसे ही नारी पात्र हैं। 'प्रतिज्ञा' उपन्यास की केंद्र बिन्दु विधवा समस्या है। इसकी नायिका पूर्णा विवाह के दो वर्ष बाद ही विधवा हो जाती है। पूर्णा की आर्थिक समस्या तो लाला बद्री प्रसाद की उदारता के कारण हल हो जाती है। लेकिन विधवा युवती की समस्या मात्र आर्थिक नहीं है। 'प्रतिज्ञा' में पूर्णा के माध्यम से प्रेमचंद ने व्यक्त किया है कि पुरुष जब बूढ़ा होते हुए भी पत्नी की मृत्यु के बाद फिर से विवाह कर सकता है तब विधवा युवती ऐसा क्यों नही कर सकती? स्त्री होने के कारण विधवा को पुनर्विवाह करने का अधिकार क्यों नहीं है?

मानवतावादी लेखक होने के कारण प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में स्त्री के अधिकार एवं उसकी स्वतंत्रता को अधिक महत्त्व दिया था। वेश्या समस्या को हल करने के लिए आपने वेश्याओं को समाज सेवा करने का सुझाव दिया है। 'सेवासदन' की सुमन और 'गबन' की जोहरा दोनों अंत में समाज सेवा में जीवन

लगाती है। सामाजिक विडम्बनाओं तथा रूढ़िगत मान्यताओं से स्त्री को मुक्त करने के प्रयास में उन्होंने रूढ़ियों के प्रति विद्रोह करके अपने मानवोचित अधिकारों को पाने के लिए नारी समाज को प्रेरित किया है। गोदान की धनिया ने विधवा झुनिया को बहू के रूप में स्वीकार करते हुए सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध प्रहार किया है। धनिया 'गोदान' का सर्वाधिक मुखर चरित्र है। अपनी सम्पूर्णता में वह होरी का प्रतिपक्ष प्रस्तुत करती हुई एक विद्रोहिणी स्त्री है। वह अन्याय के विरुद्ध हमेशा विद्रोह करती है। होरी पर जुरमाना लगाने के बाद धनिया पूरी बिरादरी को ही चुनौती देती है, "हमें नहीं रहना है बिरादरी में, बिरादरी में रहकर हमारी मुक्ति न हो जाएगी। अब भी अपने पसीने की कमाई खाते हैं, तब भी अपने पसीने की खायेंगे।" (प्रेमचंद, गोदान) प्रेमचंद यहाँ पर नारी स्वतंत्रता को नारी के श्रम से जोड़ते हुए पितृसत्तात्मक समाज की दासता से मुक्ति का जो रास्ता दिखाते हैं, वह स्त्री के लिए आत्मनिर्भरता एवं आत्मनिर्णय का द्वार खोलता है। यह राष्ट्रीयता के उस नारी विमर्श को भी ध्वस्त करता है जो अंग्रेजों की गुलामी के विरुद्ध तो आन्दोलन है, लेकिन नारी को पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कटघरों से मुक्त नहीं करता।

'गोदान' की धनिया, सिलिया, नोहरी, झुलिया और सोना सरीखी स्त्रियाँ हिन्दू समाज की वर्णाश्रमी पितृसत्तात्मक व्यवस्था के दुहरे दुष्चक्र का खुलासा करती हैं। दलित स्त्री आर्थिक और यौन जैसे दोहरे शोषण का शिकार है। सिलिया की दलित दशा उसे दातादीन की भोग्या एवं बिना दाम का मजदूर बनाती है। लेकिन उसकी सबसे भयानक त्रासदी इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था में उसका खुद का मानसिक अनुकूलन है जो इस सारे शोषण के बावजूद उस दातादीन को ही अपना रक्षक, स्वामी व पति समान मानती है। लेकिन पंडित दातादीन अपने बेटे के धर्म भ्रष्ट होने के बाद सिलिया को दुत्कार देते हैं। धनिया द्वारा सिलिया को अपने घर में शरण देना नारी एकजुटता का परिचायक है और धनिया के शब्दों में पुरुषों के विरुद्ध नफरत फूट पड़ता है, "मरद–मरद सब एक होते हैं।" (प्रेमचंद, गोदान) नोहरी और मिस मालती को अपनी आजीविका स्वयं अर्जित करके दूसरे का भरण–पोषण भी करना पड़ता है। इन दोनों स्त्रियों के जरिए प्रेमचंद पुरुष प्रधान समाज की इस रसिक दृष्टि का खुलासा करते हैं जो नारी को सौन्दर्य एवं वासना की वस्तु तो बताना चाहती है, लेकिन स्वयं नारी की देह चेतना पर कड़ा पहरा रखना चाहती है। नोहरी के शब्द इसके प्रमाण हैं, "जब तुम मुझे परदे में नहीं रख सकते, मुझे दूसरों की मजूरी करनी पड़ती है, तो यह कैसे निभ सकता है कि मैं न किसी से हँसू। यह सब तो परदे में ही हो सकता है।" (प्रेमचंद, गोदान) प्रेमचंद स्त्री की आर्थिक मुक्ति में देह की मुक्ति का रास्ता तलाशते हैं। क्योंकि आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने पर स्त्री अपने पैरों पर खड़े होकर निडरतापूर्वक अपने अधिकारों की मांग कर सकती है।

'गोदान' में स्त्री को लेकर मेहता के दकियानूसी विचारों के जरिए प्रेमचंद

Scanned with CamScanner
Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:10 +05'30'
Sanal Kumar M G

स्त्रियों की बुरी दशा से प्रेमचंद काफी चिढ़ चुके थे। नारी मात्र चूल्हा–चौका एवं पुरुषों की खुशामदी के लिए ही होती है, उनकी दुनिया चारदीवारी ही है, और वह मात्र बच्चे पैदा करने की मशीन है, जिसका स्थान पुरुषों के पैरों के नीचे है आदि। पुरुषों की रची धारणाओं की और आलोचना करते हुए प्रेमचंद स्त्री को स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर होने की बात करते थे। 'गोदान' उपन्यास की पात्र सरोज पुरुषों से सलाह–मशवरा लेने के विरुद्ध है और खुद को स्वतंत्र महसूस करती है कि, "हम पुरुषों से सलाह नहीं माँगतीं। अगर वह अपने बारे में स्वतंत्र है, तो स्त्रियाँ भी अपने बारे में स्वतंत्र हैं। युवतियाँ अब विवाह का पेशा नहीं करना चाहतीं। वह केवल प्रेम के आधार पर विवाह करेंगी।" (प्रेमचंद, गोदान) उपर्युक्त कथन से स्त्रियों के अधिकार सम्बन्धी प्रेमचंद की मान्यता व्यक्त होती है।

शिक्षित समाज में स्त्री ने पुरुष से और पुरुष ने स्त्री से मुक्ति हेतु तलाक जैसे कानूनी रास्ता को सुविधाजनक माना है। कोई स्त्री किसी पुरुष का अत्याचार सहकर तलवे चाटते अपने आपको मिटा न ले, इसके लिए तलाक जैसे कानूनी सुविधा का उपयोग करना ज़रूरी है। प्रेमचंद ने स्त्री में युगानुकूल बदलाव एवं उत्पन्न चेतना का सशक्त उदाहरण 'गोदान' में रायसाहब की बेटी मीनाक्षी द्वारा दिखाया है। मीनाक्षी पति के दुर्व्यवहार से तंग आकर तलाक लेती है। प्रेमचंद मीनाक्षी के विचारों का समर्थन इस प्रकार करते हैं कि, "गुजारे की मीनाक्षी को ज़रूरत न थी, मायके में वह बड़े आराम से रह सकती थी, मगर वह दिग्विजय सिंह के मुँह में कालिख लगाकर यहीं से जाना चाहती थी।" (प्रेमचंद, गोदान)

समग्रतः यह कह सकते हैं कि प्रेमचंद ने दलित, स्त्री और किसान जैसे हाशिए कृत वर्ग का पक्षधर होकर उनके प्रति सहानुभूति दिखाई थी। वे उनके लिए आवाज उठाते थे। प्रेमचंद ने अपने स्त्री पात्रों के जरिए भारतीय स्त्री की विवश स्थिति एवं उसकी गुलामी का खुलासा ही नहीं बल्कि स्त्री को उसके अधिकार एवं उसकी स्वतंत्रता के प्रति सचेत भी किया है। उनकी कृतियाँ सामाजिक परिवेश में अछूतों के जीवन के अन्तर्विरोध एवं अंतर्संबंधों को बड़ी सहजता से अभिव्यक्त करती हैं। दलित न होने के बावजूद भी प्रेमचंद ने दलित जीवन के मर्म का इतनी व्यापकता और कुशलता से उद्घाटन किया कि अभी तक उनका साहित्य मील का पत्थर है।

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
एन. एस. एस. हिन्दू कालेज,
चंगनाश्शेरी, कोट्टयम, केरल

❖❖❖

Scanned with CamScanner
Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:10 +05'30'
Scanned with CamScanner Sanal Kumar M G